Airo International Research Journal
Volume XIV, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

आधुनिक प्रबंध काव्यों में शैली वधान

डॉ. ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में परम्परागत शिल्प के स्थान पर काव्यरूपों के मिश्र शिल्प का प्राधान्य है । यही कारण है कि "नाटकीय विधान आज के प्रबन्ध काव्य के शिल्प का महत्वपूर्ण अंग है । वर्णनात्मक शैली के स्थान पर प्रभूत मात्रा में नाट्य प्रबन्धों की रचना इस तथ्य का परिचायक है । समकालीन मनुष्य की विडम्बनापूर्ण मन:स्थितियों, उसके टूटने बिखरने के वास्तविक चित्रों के अंकन के लिए नाटकीय पद्धति का आश्रय लेना स्वाभाविक है । आज का रचनाकार आज के मनः सत्यों की अभिव्यक्ति वर्णन प्रधान और विवरण-प्रधान पद्धतियों से न कर प्रायः संवाद शैली में पात्रों के मानसिक आघात-प्रत्याघातों को ध्यान में रखकर करता है । संवादों के माध्यम से जीवन की आंतरिक स्थिति का बिम्ब प्रस्तुत होता है और उसके द्वारा काव्य वस्तु का विकास होता है ।" इसके साथ ही "काव्यत्व के माध्यम से विश्लेषित और व्याख्यायित जीवन संदर्भों में "संडन चेंज" (आकस्मिक परिवर्तन) अनवाण्टेड और असम्भावित द्वन्द्व, कौतूहल पूर्ण स्थिति, परिवर्तन और टैन्शन आदि के लिए नाटकीयता अपेक्षित होती है । अपने समय की विडम्बनापूर्ण स्थितियों का अंकन करने में नाटकीय रचनाएँ सर्वाधिक उपयुक्त है । डॉ. नामवर सिंह के अनुसार - 'आज की विडम्बनापूर्ण स्थिति के सम्मुख नाटकीय काव्य के लिए अपार सम्भावनाएँ है और नाटकीय रचनाएं ही इस स्थिति की चुनौती को अच्छी तरह स्वीकार भी कर सकती है ।"

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में कथ्य अभिव्यक्ति हेतु अनेक शैलियों का प्रयोग किया गया है । जिनमें नाटकीय शैली, प्रश्न शैली, तर्क शैली, आत्मालाप शैली एवं मनोवैज्ञानिक शैली प्रमुख है । कहीं-कहीं न्यून मात्रा में वर्णनात्मक शैली का भी प्रयोग मिलता है, किन्तु प्रधानतः नाटकीय शैली व्यवहत हुई है । अंधायुग, एक कंठ विषपायी, प्रवाद पर्व, शम्बूक, खण्ड-खण्ड अग्नि में रंगमंचीय गुणात्मकता का पूर्ण समावेश है । कनुप्रिया, आत्मदान आदि कृतियों में एकालाप या आत्मालाप पद्धति है । समग्रत: नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्य नाट्योन्मुखी होने के कारण सशक्त एवं सम्प्रेषणीय बन पड़े हैं ।

नवीन चेतना के प्रबन्धकाव्यों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग

(i) नाटकीय शैली

'अंधायुग' में रंगमंचीय गुणात्मकता का पूर्ण समावेश है । भारती ने नाटकीय गतिशीलता का विशेष ध्यान रखा है । नाटक के प्रारम्भ में मंगलाचरण और उद्घोषणा की योजना इसी नाटकीय स्वरूप को आधार मानकर की गई है । मध्य में अन्तराल देकर वृद्धयाचक के माध्यम से नाटकीय प्रतीकात्मकता स्पष्ट करने का प्रयास किया है । समापन में प्रभु की मृत्यु की सूचना के साथ-साथ गायन

3. नामवर संह, क वता के नए प्रतिमान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 173
4. **डी. राम दरश मिश्र : हिन्दी कविता आधुनिक आयाम**, वाणी प्रकाशन, दिल्ली **पृष्ठ** - 142
5. **धर्मवीर भारती : अन्धायुग**, कताब महल, इलाहाबाद 1993
6. **नरेश मेहता : संशय की एक रात**, पुस्तकायन, इलाहाबाद 1970
7. **नरेश मेहता : महाप्रस्थान**, इलाहाबाद 1981 **पृष्ठ** – 85
8. **नरेश मेहता : प्रवाद पर्व**, लोकभारती, इलाहाबाद 1977 **पृष्ठ** - 39
9. **धर्मवीर भारती : कनुप्रिया**, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली 1976 **पृष्ठ** - 69